2

वनस्पति सेवा

वनस्पति का अर्थ उन पौधों और वृक्षों से है जो कि वन में प्राकृतिक रूप से बिना फूलों के ही बढ़ते हैं। इनमें फल की प्रक्रिया बिना फूलों के ही होती है। सामान्यत: सभी पौधे वनस्पति कहे जाते हैं।

इस पाठ में हम न केवल पौधों और वनस्पतियों को पहचानने के बारे में जानेगें बल्कि हम कुछ महत्वपूर्ण वृक्षों और पौधों को अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- वनस्पति की परिभाषा दे सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के वृक्षों और पौधों को वर्गीकृत कर सकेंगे;
- विभिन्न वृक्षों से सबंधित देवताओं के नाम बता सकेंगे; और
- कुछ पौधों के औषधीय महत्व तथा उनके उपयोग की पहचान कर सकेंगे।

2.1 वनस्पति क्या है?

वनस्पति वह पौधे और वृक्ष हैं जो वन में प्राकृतिक रूप से बिना फूलों के बढ़ते हैं। यइ फूल आने की प्रक्रिया के बना ही फल देते हैं। सामान्य रूप से सभी प्रकार के पौधे वृक्ष कहलाते हैं।

चित्र 2.1 वन

वन एक प्राकृतिक पर्यावरण है जो वृक्षों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में अन्य जीवों को भी आश्रय प्रदान करते हैं। आप कई बार 100 वर्ष तक पुराने विशाल वृक्ष देख सकते हैं। वनों में ये वृक्ष बहुत लंबाई तक बढ़ते हैं, वहीं कुछ जगहों में यह चौडाई में फैले होते हैं।

विभिन्न वनों में उगने वाले विविध वृक्ष और उनके प्रकार भूमि का स्वरूप, वर्षा और अन्य पर्यावरणीय दशाओं पर निर्भर होते हैं।

I. पौधों और वृक्षों के प्रकार

आपने कभी सोचा है कि घने जंगलों में पौधों और वृक्षों को कौन पानी देता है? निश्चित रूप से कोई सरकारी, गैर सरकारी संगठन, निजी संस्थान आदि उन्हें पानी नहीं देते। वे वर्षा के जल से प्राकृतिक रूप से बढ़ते हैं।

आयुर्वेद, स्वास्थ्य विज्ञान और अन्य ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के वृक्षों और पौधों का उल्लेख किया है।

मनुस्मृति में पौधों को निम्न रूप से वर्गीकृत किया गया है-

क्र.सं.	प्रकार	विवरण	उदाहरण
1.	वनस्पति	बिना फूलों के ही फूल आने वाले	जंगली वृक्ष
2.	औषधि	फूल आने के बाद झड़ जाते हैं	केला
3.	वृक्ष	फल और फूल दोनों देते हैं	आम
4.	गुल्म	घास जैसे जो विभिन्न शाखाओं में बढ़ती है। धरातल से कुछ फुट की ऊंचाई तक ही रहती है	नेरियम
5.	गुच्छ	झाड़ियाँ	चमेली
6.	तृण	घास	दूब/दूर्वा
7.	प्रतान	भूमि पर फैलने वाले पौधे	खरबूजा
8.	वल्ली	यह दूसरे वृक्षों के सहारे ऊपर चढ़ते हैं।	अमरबेल

जंगली वृक्ष

केले के पेड़

चित्र 2.2 वृक्षों के प्रकार

वल्ली

प्रतान

घास

झाड़ियाँ

चित्र 2.3 पौधों के प्रकार

II. वृक्षायुर्वेद

वृक्षायुर्वेद पौधों की चिकित्सकीय पुस्तक है, जिसमें पौधों को अलग प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। वृक्षायुर्वेद में इस बात का भी विस्तार से वर्णन किया गया है कि वृक्षों का किस प्रकार से उपचार किया जाना चाहिए। केवल मनुष्यों की देखभाल ही पर्याप्त नहीं है वरन पशुओं, पक्षियों, पौधों और अन्य सभी प्रकार के जीवों की भी देखभाल की जानी चाहिए। जीवों के प्रति भारतीयों की यह आधारभूत समझ थी। हम भारतीयों ने प्रकृति, वन, संसाधन आदि के बारे में गहराई से सोचा और समझा तथा अधिकाधिक सहायता प्रदान की।

एक संस्कृत सुभाषितानि में श्लोक के माध्यम से वृक्षों और पौधों के महत्व पर जोर दिया गया है।

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।

आरोग्यःपुरुषों नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

इस श्लोक के अनुसार-ऐसी कोई ध्वनि नहीं है जिसे मंत्र में बदला ना जा सके और ऐसा कोई पौधा नहीं है जिसकी कोई औषधीय उपयोगिता न हो। पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य अनुपयोगी नहीं है बल्कि वह दुलर्भ और पवित्र है जिसमें नई चीज को खोजने और प्रकृति में हर कार्य को उचित तरीके से करने की क्षमता है।

इस श्लोक को प्रत्येक पौधे के महत्व को समझने के लिए याद कर लीजिए।

भारतीय परंपराएं वृक्ष को देवता मानती हैं। हम उनकी भगवान जैसे पूजा भी करते हैं।

निम्नलिखित पांच वृक्ष अपनी दैवीय विशेषताओं और भगवान के साथ संबंध के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं-

क्र.सं.	**प्रसिद्ध वृक्ष का नाम**	**वृक्ष का संस्कृत नाम**	**संबंधित भगवान**
1.	पीपल वृक्ष	अश्वत्थ	सभी भगवान
2.	बरगद वृक्ष	वट वृक्ष	ब्रह्मा, विष्णु और शिव
3.	सराफा असोका	अशोक वृक्ष	कामदेव
4.	भातरीय गूसबेरी	अमलकी	धाह वृक्ष
5.	बेल वृक्ष	बिल्व वृक्ष	शिव

चित्र 2.4 पीपल वृक्ष

चित्र 2.5 बरगद वृक्ष

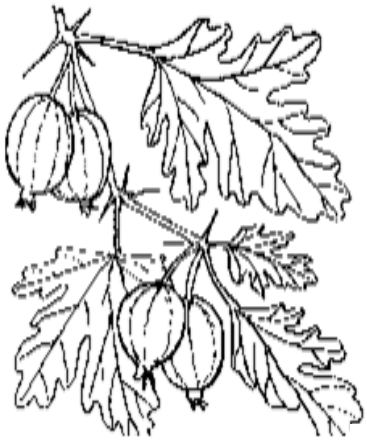

चित्र 2.6 अमलिका

चित्र 2.7 बेल

चित्र 2.8 अशोक वृक्ष

इन वृक्षों को केवल दैवीय ही नहीं माना गया वरन् इनकी बहुत सी औषधीय उपयोगिता भी है। उपर्युक्त सूची में दिए गए वृक्षों की वार्षिक रूप से या किसी विशेष दिन या त्यौहार के अवसर पर पूजा की जाती है।

पाठगत प्रश्न 2.1

कालम 'क' को कालम 'ख' से मिलाइए :

क		ख	
1.	औषधि	i.	फूल और फल देते हैं
2.	गुच्छ	ii.	शिव
3.	वल्ली	iii.	अश्वत्थ
4.	वृक्ष	iv.	अशोक वृक्ष
5.	पीपल वृक्ष	v.	फल आने के बाद नष्ट हो जाते हैं
6.	सराका असोका	vi.	लतिका
7.	बेल वृक्ष	vii.	झाड़ी

2.2 वृक्षों और पौधों का महत्व

प्रत्येक पौधे में औषधीय मूल्य हैं। यदि हम पौधों के औषधीय गुणों से परिचित हों तो आवश्यकता पड़ने पर हम उनका प्रयोग कर सकते हैं। वृक्षायुर्वेद हमें हमारे आस-पास पाए जाने वाले विभिन्न पौधों के विशिष्ट औषधीय गुणों को पहचानने में मदद करता है।

कई औषधीय पौधें घरों के आस-पास अपने औषधीय गुणों के कारण उगाए जा सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी भी पौधे या वृक्ष को औषधीय रूप में प्रयोग करने से पूर्व किसी चिकित्सक से अवश्य सलाह लीजिए।

आइए इनमें से कुछ के बारे में अध्ययन करें-

I. तुलसी

आयुर्वेदिक ग्रंथों में चार प्रकार की तुलसी का उल्लेख है-रामा, कृष्णा, वन और कपूर तुलसी।

तुलसी (औषधियों की रानी) अपने उल्लेखनीय उपचारात्मक गुणों के कारण जानी जाती है।

चित्र 2.9 तुलसी

- तुलसी को औषधि युक्त चाय के रूप में लिया जाता है।
- इसकी पत्तियों का रस सर्दी, बुखार, गला रुंघना व खांसी में आराम देता है।
- कई लोग तुलसी की माला पहनते हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें कुछ भौतिक व औषधीय गुण हैं।

II. ब्राह्मी

ब्राह्मी का पौधा कोशिका निर्माण की प्रक्रिया को जोडने और उपचार प्रक्रिया को तीव्र करने का कार्य करता है। आयुर्वेद में इसका प्रयोग होता है-

चित्र 2.10 ब्राह्मी

- मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र को ऊर्जा देने में;
- ध्यान की अवधि और एकाग्रता बढ़ाने में;
- नसों की अक्षमता के उपचार में।

III. वसाका

वसाका की जड़ों, पत्तियों और फूल के रस का आयुर्वेद में प्रयोग निम्न के उपचार में होता है–

- बुखार, खांसी, अस्थमा, आंतरिक रक्तस्त्राव, क्षय रोग, गुल्म, कुष्ठ, मोटापा आदि।

चित्र 2.11 वसाका

- त्वचा रोग, प्रदर, कष्टपूर्ण प्रसव, वमन, बवासीर।
- चेचक, पेशाब का रुकना, मुंह की बीमारियों और रसायनों में।

IV. काम कस्तूरी

आपने कई बार इसका प्रयोग पेट फूलने पर उपचार में देखा होगा। इसमें निम्न रोगों में निदान की क्षमता है–

- भूख बढ़ाने में।
- पेट में गैस को कम करने में।

चित्र 2.12 काम कस्तूरी

V. लेमनग्रास

लेमनग्रास के असंख्य उपचारात्मक तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी लाभ का उल्लेख मिलता है।

- लेमनग्रास बैक्टीरिया और खमीर (यीस्ट) को रोकता है।
- तंत्रिका तंत्र तथा तनाव संबंधी स्थितियों में लाभदायक।

चित्र 2.13 लेमनग्रास

पाठगत प्रश्न 2.2

सही या गलत पर चिन्ह लगाइए–

1. घरों के आस-पास औषधीय पौधे नहीं लगाए जा सकते।
2. वृक्षायुर्वेद हमें विभिन्न पौधों की विशिष्ट औषधीय गुणों को पहचानने में सहायता करता है।
3. वसाका के रस का प्रयोग आयुर्वेद में बुखार तथा आंतरिक रक्तस्त्राव के उपचार में किया जाता है।
4. लेमनग्रास तंत्रिका तंत्र तथा तनाव संबंधी स्थितियों में लाभदायक है।
5. कामकस्तूरी में भूख को घटाने की क्षमता है।

आपने क्या सीखा

- वनस्पति वह पौधे और वृक्ष हैं जो प्राकृतिक रूप से जंगलों में बिना फूल के बढ़ते हैं। इनमें फूल आने के चरण के बिना ही फल आते हैं। सामान्य रूप से सभी पौधे वनस्पति कहलाते हैं।
- जंगल एक प्राकृतिक संरचना है जो अन्य जीवों को भी आश्रय देती है।
- आयुर्वेद, स्वास्थ्य विज्ञान व अन्य ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के पौधों और वृक्षों की पहचान की गई है।
- इन वृक्षों को न केवल दैवीय माना गया वरन् ये औषधि के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं।
- कुछ औषधीय पौधे घरों के आस-पास उगाए जा सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. मनुस्मृति में दिए गए वृक्षों के वर्गीकरण के आधार पर तालिका बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
2. पांच महत्वपूर्ण वृक्षों और उनसे संबंधित देवताओं की सूची बनाइए।
3. ब्राह्मी के औषधीय लाभ क्या हैं?
4. वसाका को हम किस रूप में प्रयोग कर सकते हैं?
5. लेमन ग्रास को किस रूप में उपयोग करना लाभदायक है।

उत्तरमाला

2.1

1. -v
2. -vii
3. -vi
4. -i
5. -iii
6. -iv
7. -ii

2.2

1. गलत
2. सही
3. सही
4. सही
5. गलत